

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

24-अगस्त-2017 18:44 IST

पूणे में भारतीय कृषि उद्योग फाउंडेशन (BAIF) के स्वर्णिम जयंती समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आज, 24 अगस्त, यानि संस्था के स्थापना दिवस को आप गर्व दिवस के रूप में मनाते हैं।

“बायफ” की राष्ट्र निर्माण में जो भूमिका रही है, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

मेरे लिए ये व्यक्तिगत रूप से बहुत सुखद होता कि मैं आज आपके बीच आकर आपकी खुशियों में शामिल होता, आपके नए अनुभव सुनता, आपसे कुछ नया सीखता।

मुझे याद है जब कुछ वर्ष पहले “वाडी” कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी, तो नवसारी और वलसाड में आपके कार्यों को मैंने बहुत करीब से देखा था। इसलिए “बायफ” के साथ मैं खुद को भावनात्मक रूप से बहुत जुड़ा हुआ महसूस करता हूँ। जिस मिशन के साथ देश के कई राज्यों में आपकी संस्था काम कर रही है, वो एक संस्था के लिए सतोष का विषय है।

आज यहां इस कार्यक्रम में कई पुरस्कार भी दिए गए हैं। सम्मान पाने वालों में कुछ सेल्फ हेल्प ग्रुप हैं, कुछ को व्यक्तिगत प्रयासों की वजह से पुरस्कार मिला है। कोई कर्नाटक का है, कोई गुजरात का है, कोई महाराष्ट्र का है, कोई झारखंड का है। मैं उन्हें भी बधाई देता हूँ और ये कामना करता हूँ कि इसी तरह वो समाजहित में काम करते रहेंगे।

साथियों, इसी वर्ष साबरमती आश्रम की स्थापना के 100 वर्ष और चंपारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे हुए हैं। इसी वर्ष सार्वजनिक गणेशोत्सव के भी 125 वर्ष पूरे हो रहे हैं। देश के इतिहास में ये तीनों ही पड़ाव स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा देने वाले रहे हैं। जन-जन की भागीदारी से कैसे संकल्प की सिद्धि होती है, ये उसके प्रतीक हैं।

जन-भागीदारी से जन-कल्याण का ये विजन भारतीय एगो इंडस्ट्रीज फाउंडेशन का भी आधार रहा है। इसे 50 वर्ष भले अभी पूरे हो रहे हों लेकिन इसकी नींव तभी रख दी गई थी जब 1946 में मणिभाई, गांधी जी के साथ उरुलीकचन गांव पहुंचे थे। गांधी जी की प्रेरणा से मणिभाई ने इस पूरे क्षेत्र के कायाकल्प का संकल्प लिया था और इसकी शुरुआत की थी, गुजरात के गीर से गावों को यहां लाकर।

हमारे गांवों में मौजूद परंपरागत ज्ञान और विज्ञान को आधुनिक तकनीक से जोड़कर किसान की आय कैसे बढ़ाई जा सकती है, ये आपकी संस्था ने करके दिखाया है।

साथियों, देश के संतुलित विकास के लिए बहुत आवश्यक है कि देश के गांवों में रहने वाला किसान सशक्त हो। एक सशक्त किसान के बिना न्यू इंडिया का सपना साकार नहीं हो सकता और इसलिए सरकार 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लक्ष्य पर काम कर रही है। इसलिए अब कृषि योजनाओं की अप्रोच में बदलाव करते हुए, उन्हें production centric होने के साथ ही income centric भी बनाया गया है।

आज सरकार बीज से बाजार तक किसान के साथ खड़ी है। पानी की एक-एक बूंद के इस्तेमाल पर जोर है। ऑर्गेनिक खेती और crop diversification को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को मिट्टी की सेहत की जानकारी के लिए अब तक 9 करोड़ से ज्यादा सॉयल हेल्थ कार्ड दिए जा चुके हैं।

e-NAM योजना के तहत देशभर की 500 से ज्यादा कृषि मंडियों को ऑनलाइन जोड़ा जा रहा है। अभी हाल ही में “प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना” भी शुरू की गई है। इसका मकसद देश में भंडारण की समस्या से निपटना और फूड प्रोसेसिंग को बढ़ावा देना है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से ये सुनिश्चित किया जा रहा है कि अगर किसी वजह से फसल खराब भी हो गई तो किसानों की जिंदगी पर आफत ना आए। किसानों को सूदखोरों के चुंगुल से निकालने के लिए सबसे कम ब्याज दरों पर कर्ज दिया जा रहा है।

आप देखेंगे कि सरकार के ये प्रयास इसलिए हैं कि किसान खेती से जुड़ी चिंता से बाहर निकले, उसका खर्च कम हो और आमदनी बढ़े। जब देश का अन्नदाता चिंतामुक्त होगा, तो देश भी विकास की नई ऊँचाई प्राप्त करेगा।

“बायफ” बहुत ही सेवाभाव से बरसों से इस कार्य में लगा हुआ है लेकिन आज मैं आपके बीच कुछ नए विचारों की seeding या बीजारोपण करना चाहता हूँ। ये किसी एक्सपर्ट को राय या ज्ञान देना नहीं है बल्कि एक एक्सपर्ट से आग्रह करने की तरह है।

मुझे पता है कि महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप के माध्यम से “बायफ” किस तरह लाखों महिलाओं को सशक्त कर रहा है। लेकिन क्या इसे थोड़ा और Focus किया जा सकता है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक देश के पशुपालन सेक्टर को लगभग 70 प्रतिशत महिलाएं मिलकर संभाल रही हैं। चाहे जानवरों के लिए चारे का इंतजाम हो, पानी की व्यवस्था हो, दवाई-दूध, सारे काम प्रमुखता से महिलाएं ही कर रही हैं।

यानि एक तरह से देश का पशुपालन सेक्टर पूरी तरह महिलाओं की कुशलता पर टिका हुआ है। इसलिए आज बहुत आवश्यकता है कि महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप को veterinary education, रिसर्च, सर्विस डिलिवरी सिस्टम के बारे में विशेष ट्रेनिंग दी जाए। जितनी ज्यादा महिलाएं इस फील्ड में trained होंगी, उतना ही देश का पशुधन मजबूत होगा और खुद महिलाओं का भी भला होगा।

“बायफ” जैसी संस्था ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को इसके लिए प्रेरित कर सकती है, उन्हें ट्रेनिंग देने के लिए कार्यक्रमों की शुरुआत कर सकती है।

साथियों, हमारे देश में हर साल लगभग 40 हजार करोड़ रुपए का नुकसान पशुओं को होने वाली बीमारियों की वजह से होता है। इससे निपटने के लिए कुछ राज्यों में पशु आरोग्य मेले लगाए जाते हैं। इनमें पशुओं के कैटेरेक्ट के ऑपरेशन से लेकर दांतों की सफाई तक के काम किए जाते हैं। लेकिन इस तरह के पशु आरोग्य मेलों की संख्या को और बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। “बायफ” जैसी संस्थाएं देश भर में राज्य सरकारों के साथ मिलकर पशु आरोग्य मेले लगाने में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकती हैं।

आपसे मेरा विशेष आग्रह इसलिए है क्योंकि आपकी संस्था पहले ही 15 राज्यों में काम कर रही है और आपकी क्षमता पूरे देश में विस्तार करने की है। देश के उत्तर-पूर्व के राज्य भी “बायफ” के कदम वहां जमने का इंतजार कर रहे हैं। देश के उत्तर-पूर्व के राज्य, जिन्हें मैं अष्टलक्ष्मी कहता हूं, वहां पर ऑर्गेनिक फॉर्मिंग की बहुत संभावनाएं हैं। उन्हें आपके अनुभव से बहुत फायदा मिल सकता है।

इसी तरह Medicinal और Aromatic Plants की खेती को लेकर भी किसानों में जागरूकता बढ़ाने जाए की आवश्यकता है। हमारे देश में Medicinal और Aromatic Plants की हजारों species हैं, दुनिया भर में इनकी डिमांड है। लेकिन डिमांड और सप्लाई का गैप भी बहुत ज्यादा है। सरकार, प्रगतिशील किसान और बायफ जैसे संगठन इसकी खेती के साथ ही पूरी सप्लाई चेन की जानकारी देने का काम मजबूती के साथ कर सकती है।

साथियों, Green Revolution और White Revolution से देश भली भांति परिचित है। समय की मांग ये है कि Blue Revolution के द्वारा हमारे मछुवारे भाइयों के जीवन में बदलाव लाया जाए, Sweet Revolution, यानि मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन द्वारा किसानों की आय बढ़ाई जाए।

Green Revolution, White Revolution के साथ अब हम Blue Revolution, Sweet Revolution और water revolution को जोड़ने के लिए काम कर रहे हैं।

खेती सिर्फ गेहूं-धान और सरसों पैदा करना ही नहीं है। परंपरागत खेती के साथ-साथ जितना खेती से जुड़े सब-सेक्टर्स पर ध्यान दिया जाएगा, उतना ही किसान को आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी। जैसे मधुमक्खी पालन, को ही लीजिए। एक रीसर्च के मुताबिक परंपरागत खेती कर रहा किसान, 50 bee कॉलोनी की छोटी यूनिट लगाकर 2 लाख रुपए सालाना की अतिरिक्त आय कमा सकता है। मधुमक्खियां शहद उत्पादन के साथ-साथ pollination support में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाती हैं।

मधुमक्खी पालन हो, मछली पालन हो, गन्ने, crop रेसिड्यू से इथेनॉल का उत्पादन हो, इनसे आज के समाज की डिमांड पूरी होती है और इसलिए परंपरागत खेती में जुटे किसानों को ऐसे सब-सेक्टर्स के प्रति जागरूक करने का काम, उनकी मदद करने का काम “बायफ” बखूबी कर सकती है।

साथियों, महाराष्ट्र का विदर्भ हो, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना-आंध्र प्रदेश के कुछ इलाके हों, यू पी का बुंदेलखंड हो, ये कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर किसान पानी की कमी से जूझता रहा है।

सरकार द्वारा अपनी तरफ से पानी की कमी दूर करने की कोशिश लगातार की जा रही है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत 99 ऐसे projects पूरे किए जा रहे हैं जो बहुत समय से अधूरे पड़े हुए थे। इनमें से 21 projects इस साल पूरे हो चुके हैं। इसके साथ-साथ इस बात पर भी जोर दिया जा रहा है कि पानी की हर बूंद का हम बेहतर इस्तेमाल करें। Drip irrigation, micro irrigation और crop diversification भी इसका माध्यम हैं। मनरेगा की भी 60 प्रतिशत से ज्यादा राशि सरकार जल संरक्षण और जल प्रबंधन पर ही खर्च कर रही है।

लेकिन, भाइयों और बहनों, जब तक सारे किसान इस प्रयास के साथ नहीं जुड़ेंगे तब तक हम इसे सफल नहीं बना पाएंगे। मुझे बताया गया है कि आज इस कार्यक्रम में हिवरे बाजार से श्री पोपटराव पवार भी आए हुए हैं। हिवरे बाजार एक बेहतरीन उदाहरण है कि एक-साथ होकर, एक दूसरे के हितों को ध्यान में रखते हुए हम किस तरह से पानी का सही इस्तेमाल कर सकते हैं, ताकि हमारी water use efficiency बढ़े और हमारे ग्राउंड वाटर रिसोर्सज का sustainable तरीके से इस्तेमाल हो। मुझे “बायफ” से उम्मीद है कि जिन गांवों में वो काम कर रहे हैं वहां “जन-आंदोलन और जल-आंदोलन” की मिसाल खड़ी करेंगे।

इसके अलावा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और बैंकों से ही कर्ज लेने के लिए प्रोत्साहित करके भी इन इलाकों के किसानों की जिंदगी आसान बनाने में आप मदद कर सकते हैं।

भाइयों और बहनों, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने ग्रामगीता में लिखा है-

“ग्रामसुधारणेचा मूलमंत्र, सज्जनांनी व्हावे एकत्र !

संघटन हेची शक्तिचे सूत्र, ग्रामराज्य निर्माण करी” !!

यानि ग्राम सुधार का मूल मंत्र है सभी लोग एकजुट होकर, संगठन शक्ति के साथ काम करें। तभी ग्राम-राज्य का निर्माण होगा। यही मंत्र महात्मा गांधी ने दिया था, इसी का पालन मणिभाई देसाई ने किया। आज आपकी संस्था की संगठन शक्ति से गांवों के विकास का नया द्वार खुल सकता है। आज आवश्यकता है कि हम अपने गांवों पर गर्व करें, गांव के लोग स्थापना दिवस मनाएं, एक विजन बनाएं, उसे लेकर आगे बढ़ें। आप जिन 80 हजार गांवों में काम कर रहे हैं, उनमें गांव का नेतृत्व एक विजन के साथ आगे बढ़ें। यही न्यू इंडिया के निर्माण का एक माध्यम होगा।

साथियों, खेती की input cost कम करने के लिए सरकार लगातार काम कर रही है। आज सॉयल हेल्थ मैनेजमेंट की वजह से, सॉयल हेल्थ कार्ड की वजह से, यूरिया की नीम कोटिंग की वजह से, ड्रिप इरिगेशन को बढ़ावा देने की वजह से, खेती पर होने वाला किसानों का खर्च कम हुआ है। सोलर पंप का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करके भी किसान डीजल पर होने वाला खर्च बचा रहे हैं। इन आधुनिक तकनीकों के उपयोग से फसल का उत्पादन भी बढ़ा है। इस विषय में “बायफ” का भी पुराना अनुभव रहा है और इसलिए खेती की input cost कम करने के लिए और क्या-क्या किया जा सकता है, इस बारे में आपके सुझावों का हमेशा स्वागत है। आप जितना ज्यादा किसानों को इस अभियान में जोड़ेंगे, उतना किसानों की बचत होगी और मुनाफा बढ़ेगा।

साथियों, waste to wealth भी ऐसा विषय है, जो आज की आवश्यकताओं और भविष्य की चुनौतियों से जुड़ा हुआ है।

Agriculture waste की recycling का काम हो, compost बनाने का काम हो, इससे भी किसानों की आमदनी बढ़ सकती है और पूरे गांव को इसका फायदा मिल सकता है।

आज खेत में कोई चीज वेस्ट नहीं है, हर चीज इस्तेमाल हो सकती है, वो वेल्थ बन सकती है।

इसी तरह गांवों में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देकर भी पूरे गांव को बिजली के मामले में आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

खेतों के किनारे इतनी जगह होती है, वहां पर सोलर पैनल लगाकर बिजली बनाने के लिए भी किसानों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। जैसे देशभर में मिल्क कॉपरेटिव होती है, वैसे ही सोलर कॉपरेटिव बनाकर बिजली का उत्पादन किया जा सकता है, उसे बेचा जा सकता है।

साथियों, आज आप लोग देखते होंगे, गांवों में भी लगभग हर घर के ऊपर एक छोटी सी छतरी दिख जाती है। ये डिजिटल तकनीक ही तो है जिसने सब कुछ इतना आसान कर दिया है। पहले एक दो चैनल आते थे, अब सौ-दो सौ चैनल आते हैं। रिमोट अब उनके लिए बहुत मुश्किल यंत्र नहीं रह गया है। दो-तीन साल का बच्चा भी रिमोट से चैनल बदल लेता है।

तकनीक से ऐसा ही अपनत्व देश में डिजिटल गांव की कल्पना को साकार करेगा। ऐसा गांव जहां ज्यादातर लेन-देन डिजिटल तरीके से हो, कर्ज से लेकर स्कॉलरशिप तक, सारे फॉर्म ऑनलाइन भरे जाएं, स्कूलों में डिजिटल तकनीक से पढ़ाई हो, स्वास्थ्य सेवा भी डिजिटल तकनीक से जुड़ी हो।

डिजिटल गांव की इस कल्पना को साकार करने के लिए सरकार देश की हर पंचायत को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ रही है। लेकिन साधन और संसाधन जुटाना ही काफी नहीं होगा। उनका इस्तेमाल करने के लिए लोगों को समर्थ करने का काम आप जैसी संस्थाएं ही कर सकती हैं। इसलिए क्या आपकी संस्था ये संकल्प ले सकती है कि हर साल कम से कम 500 गांवों को “कमकैश गांव” बनाएगी। आप देखिएगा, आप 500 गांवों को “कमकैश” बनाएंगे तो आसपास के एक दो हजार गांव अपने आप इस व्यवस्था को अपनाने लगेंगे। एक chain reaction की तरह ये एक गांव से दूसरे गांव में फैलेगा। साथियों, गांधी जी का मंत्र गांवों को सशक्त करके ही देश को मजबूत करने का था। उस मंत्र पर चलते हुए “बायफ” के सेवाभाव ने लाखों किसानों की जिंदगी बदली है, उन्हें स्वरोजगार करना सिखाया है। संकल्प लेकर सिद्धि कैसे की जाती है, उसका साक्षात प्रमाण आपकी संस्था है।

मेरा आग्रह है आपसे, जो विचार आपके सामने मैंने रखे हैं, उस से जुड़े हुए कुछ नए संकल्पों को अपने साथ जोड़िए। 2022 में, जब देश स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे करेगा, तब आपके संकल्पों की सिद्धि से देश के करोड़ों किसानों की सफलता सिद्ध होगी।

धन्यवाद !!!

AKT/SH/SK/VP

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

23-सितम्बर-2017 14:10 IST

शहंशाहपुर, वाराणसी में पशुधन आरोग्य मेले के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयो और बहनों।

इतनी सवेरे, सवेरे, इतना बड़ा जन-सागर! मैं कल्पना नहीं कर सकता हूँ कि चारों तरफ लोग ही लोग नजर आ रहे हैं! मैं सबसे पहले आप सबसे क्षमा चाहता हूँ, क्योंकि हमने जो व्यवस्था करी थी वो व्यवस्था कम पड़ गई और बहुत लोग धूप में खड़े हैं, उनको कष्ट हो रहा है, उसके बावजूद भी आशीर्वाद देने के लिए आए हैं। मैं उनका आभार भी व्यक्त करता हूँ; और मैं उनसे क्षमा भी चाहता हूँ। लेकिन जो धूप में खड़े हैं उनको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि ये ताप मैं आप जो तप रहे हैं, ये आपकी तपस्या हम कभी बेकार नहीं जाने देंगे।

भाइयो, बहनों, मैं उत्तर प्रदेश सरकार को, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी को, हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। क्योंकि आज उन्होंने एक पशुधन आरोग्य मेले की योजना की। और ये पशुधन आरोग्य मेला, मैं जब वहाँ गया तो करीब-करीब 1700 पशु अलग-अलग जगह से, अलग-अलग जगह से यहाँ आए हैं और उन पशुओं के आरोग्य के लिए, पशुओं के आरोग्य के लिए वहाँ पर सारे expert doctor आए हैं। और वो डॉक्टर बंधु भी पशु के आरोग्य की चिंता कर रहे हैं। और मुझे विश्वास है कि जैसे उत्तर प्रदेश सरकार ने कोशिश किया, अब वे पूरे उत्तर प्रदेश में पशुधन आरोग्य मेला लगाएंगे और पशुधन आरोग्य मेले के द्वारा हमारा गरीब किसान, जो पशु की देखभाल करने में कभी-कभी संकोच करता है, आर्थिक कारणों से कभी-कभी वो कर नहीं पाता है, और इसलिए ऐसे, ऐसे किसानों को ये पशुधन आरोग्य सेवा के कारण बहुत बड़ी राहत होगी।

और हम जानते हैं कि कृषि के क्षेत्र में, कृषि के क्षेत्र में हमारे किसानों को आय में अगर सबसे ज्यादा कोई मदद पहुंचाता है, तो वो मदद पशुपालन, दूध उत्पादन के द्वारा पहुंचती है। और इसलिए पशुपालन और दूध उत्पादन के द्वारा, हमारे आरोग्य पशु मेले के द्वारा आने वाले दिनों में गांव, गरीब किसान, हमारे पशुपालक; उनके लिए बहुत ही उत्तम सेवा होगी, सुविधा होगी। और इस काम के लिए मैं उत्तर प्रदेश की सरकार को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

भाइयो, बहनों, राजनीति का स्वभाव होता है कि वे उसी काम को करना पसंद करते हैं जिसमें वोट की संभावना होती है। अपनी वोट बैंक मजबूत बनाने के लिए वो अपना काम किया करते हैं। लेकिन भाइयो, बहनों हम अलग संस्कारों से पले-बढ़े हैं, हमारा चरित्र अलग है। हमारे लिए दल से बड़ा देश है और दल से बड़ा देश होने के कारण हमारी प्राथमिकताएं वोट के हिसाब से नहीं होती हैं।

आज ये पशुधन आरोग्य मेला- उन पशुओं की सेवा कर रहे हैं, जिन पशुओं को कभी वोट देने के लिए नहीं जाना है। ये किसी के वोटर नहीं हैं। और आज तक, 70 साल मैं पशुधन के लिए इस प्रकार का अभियान कभी चलाया नहीं गया है। आरोग्य सेवा मिलने के कारण पशुपालन में एक नई सुविधा मिलेगी, एक नई व्यवस्था मिलेगी।

आज हमारा देश दूध उत्पादन में काफी आगे है। लेकिन प्रति-पशु दुनिया में जो दूध मिलता है, उसकी तुलना में हमारे यहाँ पशु दूध बहुत कम देता है। और उसके कारण पशु-पालन महंगा हो जाता है। प्रति-पशु अगर दूध उत्पादन बढ़ाने में हम सफल होते हैं, तो मुझे विश्वास है कि हमारे किसानों को पशु-पालन में रुचि बढ़ेगी और दूध उत्पादन के द्वारा एक नई आर्थिक क्रांति को भी जन्म मिलेगा।

भाइयो, बहनों, मेरा जन्म गुजरात में हुआ, मेरा कार्यक्षेत्र गुजरात रहा, और मैंने देखा है कि वहाँ सहकारी प्रवृत्ति के माध्यम से दूध के लिए जो काम हुआ है, उस काम ने वहाँ के किसानों के जीवन को एक नई ताकत दी है। मुझे बताया गया कि लखनऊ-कानपुर के इलाके में गुजरात से आई हुई बनास डेयरी ने किसानों से दूध खरीदने का प्रारंभ किया है। और उसके कारण पहले किसानों को जो दूध मिलता था, उससे अनेक गुना दूध आज किसानों को दूध के दाम मिल रहे हैं। आने वाले दिनों में मुझे बताया गया कि काशी क्षेत्र के किसानों का दूध भी बनास डेयरी खरीदने के लिए शुरू करने वाली है।

मुझे विश्वास है कि जब ये दूध खरीदने का काम शुरू होगा, डेयरी के माध्यम से शुरू होगा, fat के आधार पर खरीद करना शुरू होगा तो इस काशी क्षेत्र के किसानों को भी बहुत बड़ी मात्रा में दूध के दामों में बढ़ोत्तरी होगी और उनकी आय में भी बढ़ोत्तरी होगी। और इसलिए किसानों के लिए, पशु-पालकों के लिए, दूध उत्पादकों के लिए, गुजरात सरकार की मदद से, बनास डेयरी की मदद से; उत्तर प्रदेश सरकार ने जो अभियान चलाया है; मैं उत्तर प्रदेश सरकार को और उत्तर प्रदेश के किसानों को ये शुभकामनाएं देता हूँ कि दूध उत्तपदन , पशु-पालन का काम आगे बढ़ाने में हम सब मिल करके प्रयास करें।

भाइयो, बहनों, 2022, भारत की आजादी के 75 साल होंगे। और भारत की आजादी के 75 साल 2022 में हो रहे हैं, तब, हमारे देश की आजादी के दीवानों ने जो सपने देखे थे, उन सपनों को पूरा करने के लिए हम सबने मिल करके संकल्प करना चाहिए। पांच साल के लिए, उस संकल्प के लिए, अपनी शक्ति और समय लगाना चाहिए, उन संकल्प को पूरा करके रहना चाहिए। अगर हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ नागरिक एक-एक संकल्प लेते हैं तो देश पांच साल के भीतर-भीतर सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा। और इसलिए भाइयो-बहनों, 2022, आजादी का संकल्प।

हमारा संकल्प है 2022 तक हम हमारे किसानों की आय double करें, दोगुना करें। और उसके लिए पशु-पालन एक मार्ग है, खेती में आधुनिकता लाना एक मार्ग है, soil health card के द्वारा जमीन की जांच हो, परख हो और किसान को पूरी उसकी मदद मिले, इस काम को बल देने के दिशा में काम कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में भी नई सरकार बनने के बाद जिस तेजी से किसानों को जिस प्रकार से soil health card देने का काम चला है, वो आने वाले दिनों में हमारे किसानों की भलाई के लिए काम आने वाला है।

उसी प्रकार से हम में से कोई गंदगी में जीना पसंद नहीं करता है। कोई इंसान नहीं होगा जो गंदगी को नफरत नहीं करता है। हर किसी को गंदगी के प्रति नफरत है। लेकिन स्वच्छता ये हमारी जिम्मेदारी है, ये स्वभाव हमारे देश में पनपा नहीं है। हम गंदगी करते हैं, स्वच्छता कोई और करेगा; इसी हमारी मानसिकता का परिणाम है कि हमें भारत को जैसा स्वच्छ बनाना चाहिए, हमारे गांवों को जैसा स्वच्छ बनाना चाहिए, हमारे नगरों को जैसा स्वच्छ बनाना चाहिए; हम नहीं बना पा रहे हैं। आप में से कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि स्वच्छता, ये हर नागरिक की जिम्मेवारी है। स्वच्छता, ये हर परिवार की जिम्मेवारी है और इसलिए ये स्वच्छता, ये सिर्फ इसलिए अच्छा गांव लगे, अच्छा मोहल्ला लगे; इतने से काफी नहीं है। स्वच्छता हमारे आरोग्य के लिए बहुत जरूरी है। भांति-भांति की जो बीमारियां बढ़ रही हैं, उसके मूल में गंदगी होती है।

अभी यूनिसेफ ने 10,000 परिवारों का सर्वे किया भारत में। Toilet बनाने वाली बात को लेकर सर्वे किया और मैंने कल एक अखबार में पढ़ा कि यूनिसेफ ने कहा है, अगर toilet घर में है तो सालाना 50,000 रुपया जो बीमारी के पीछे खर्च होता है, वो बच जाता है। आज मुझे यहां पड़ोस में ही एक छोटे से गांव में toilet बनाने के काम करने का सौभाग्य मिला। और गांव के लोगों ने तय किया है कि वे 2 अक्टूबर तक गांव को open defecation free बनाएंगे। गांव का एक भी व्यक्ति 2 अक्टूबर के बाद खुले में शौच करने नहीं जाएगा; ये संकल्प गांव के लोगों ने लिया है। मुझे खुशी हुई कि नवरात्रि के इस पावन पर्व में मुझे शौचालय की ईंट रखने का सद्भाग्य मिला; मेरे लिए वह भी एक पूजा है। स्वच्छता मेरे लिए पूजा है, स्वच्छता मेरे देश में गरीबों को बीमारी से मुक्त कराएगी। स्वच्छता मेरे देश में गरीबों को आरोग्य के कारण जो आर्थिक बोझ आता है, उससे मुक्ति दिलाएगी। और इसलिए ये गरीबों की भलाई करने का मेरा अभियान है और उसमें जो लोग साथ दे रहे हैं, मैं उनको बधाई देता हूँ।

आज मुझे खुशी हुई, सामान्य रूप से हमारे देश में शौचालय शब्द प्रचलित है। लेकिन आज मैंने जिस गांव में जा करके शौचालय की नींव रखी; वहां जितने शौचालय बने हुए थे उस पर लिखा हुआ है, इज्जतघर। ये शब्द मुझे इतना अच्छा लगा, ये शौचालय सच्चेमुच में एक इज्जतघर है; खास करके हमारी बहन-बेटियों के लिए ये इज्जतघर है। और जहां इज्जतघर है, वहां घर की भी इज्जत है। जहां इज्जतघर है, वहां गांव की भी इज्जत है और इसलिए ये इज्जतघर शब्द देने के लिए, शौचालय को इज्जतघर से पहचानने के लिए, मैं उत्तर प्रदेश सरकार को इस काम के लिए भी बधाई देता हूँ। उन्होंने शौचालय की प्रतिष्ठा बढ़ा दी है। इज्जतघर नाम आने वाले दिनों में जो भी इज्जत के लिए जागृत है, जिसको भी इज्जत की चिंता है, वो जरूर इज्जतघर बनाएगा, वो जरूर इज्जत का उपयोग करेगा और इज्जतवान बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

भाइयो-बहनों, हमारे देश में आज भी करोड़ों परिवार ऐसे हैं, उनके पास रहने के लिए अपना घर नहीं है, अपनी छत नहीं है। वे ऐसे गुजारा करते हैं कि जो किसी भी इंसान के लिए बहुत ही दयनीय होता है। भाइयो, बहनों, ये हमारा दायित्व है कि हम- हमारे गरीब से गरीब व्यक्ति को एक छत दें, गरीब से गरीब को रहने के लिए घर दें।

और इसलिए भाइयो, बहनों, हमने एक बहुत बड़ा बीड़ा उठाया है। मैं जानता हूँ जो काम हमने उठाया है, बहुत मुश्किल काम है। लेकिन अगर मुश्किल काम मोदी नहीं करेगा तो कौन करेगा? और इसलिए भाइयो, हमने तय किया है, 2022-भारत की आजादी के 75 साल होंगे, हिन्दुस्तान के हर गरीब को उसका घर देंगे। चाहे गरीब शहर में रहने वाला हो, चाहे गरीब गांव में रहने वाला हो। जिसके पास भी घर नहीं होगा, उसको घर देने का बहुत बड़ा बीड़ा हमने उठाया है। और जब करोड़ों की तादाद में घर बनेंगे, एक प्रकार से भारत में इतने घर बनाने हैं, यूरोप का एक जैसे नया छोटा देश हमें हिन्दुस्तान में बनाना है; इतनी संख्या में हमें नए घर बनाने हैं। और जब नए घर बनेंगे, ईटा लगेगी, सीमेंट लगेगा, लोहा लगेगा, लकड़ी लगेगी, नए-नए लोगों को रोजगार मिलेगा, मिस्त्री को काम मिलेगा, एक रोजगार का नया अवसर पैदा होगा जब करोड़ों-करोड़ों घर बनेंगे।

आज मुझे खुशी है कि उत्तर प्रदेश में पहले जो सरकार थी उसको हम चिट्ठियां लिखते रहते थे। हम कहते थे कि आप हमें सूची दो, लिस्ट बनाओ, आपके राज्य में कितने परिवार हैं जिनके पास घर नहीं है; भारत सरकार योजना बनाना चाहती है। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि पिछली सरकार, उसको गरीबों के घर बनाने में रुचि नहीं थी। हमने इतना दबाव डाला, इतना दबाव डाला, तब जा करके मुश्किल से 10,000 लोगों की सूची दी। लेकिन जब योगीजी की सरकार आई तो धड़ाधड़ उन्होंने काम शुरू किया और आज लाखों की तादाद में नाम उन्होंने register करवा दिए। इतना ही नहीं, आज मुझे जिनको घर बनने वाले हैं, उनके लिए राशि देने का भी मुझे सौभाग्य मिला।

भाइयो, बहनों, चाहे स्वच्छता की बात हो, चाहे गांवों में बिजली पहुंचाने की बात हो, चाहे स्कूलों में toilet बनाने की बात हो, चाहे गांव को खुले में शौच करने से मुक्त करने की बात हो, चाहे घर-घर में बिजली पहुंचाने की बात हो, चाहे घर-घर में लोगों को शुद्ध पीने का पानी पहुंचाने की बात हो, ये सारे काम ऐसे हैं जिसकी तरफ पहले हमारे देश में उदासीनता रही।

अगर मेरे गांव, गरीब किसान की जिंदगी बदलती है, हमारे मध्यमवर्गीय परिवार की जिंदगी बदलती है, तो देश हम जैसा बनाना चाहते हैं, वैसा बनके रहेगा और उसकी पहली शर्त है हमारे मध्यमवर्गीय परिवारों को मदद मिले। हमारे गरीब परिवारों को मदद मिले, उनकी जिंदगी में बदलाव आए। और इसलिए हमने उन सारी योजनाओं को बदल दिया है, उन सारी योजनाओं को ताकत दी है, जिसके कारण हमारे देश में एक बहुत बड़ा बदलाव आए।

भाइयो, बहनों, बनारस में भी स्वच्छता को ले करके कल कई project को लोकार्पण करने का मुझे अवसर मिला। करीब 600 करोड़ रुपयों की लागत से वहां पर sewage treatment plant, और हमने size इतनी बनाई है कि आज से 20 साल के बाद भी बनारस का विकास-विस्तार होगा तो भी ये व्यवस्था कम नहीं पड़ेगी, 20 साल के बाद भी कम नहीं पड़ेगी, इतना बड़ा काम हमने तय किया है।

हमने कूड़े-कचरे को waste में से wealth, इस पर भी बल दिया है। और waste में से wealth का बल देने के साथ-साथ हमने ये तय किया है कि कूड़े-कचरे से बिजली उत्पादन करने का काम किया जाएगा और कूड़े-कचरे से बिजली उत्पादन करके 40 हजार घरों में बिजली पहुंचा पाएंगे। हमने एक LED bulb का अभियान चलाया। अकेले काशी में जितने LED bulb लोगों के घरों में लगे हैं, इसके कारण हर परिवार का बिजली का बिल कम हुआ है। और जब मैंने हिसाब लगाया तो अफसरों ने मुझे बताया, अकेले काशी में जिन्होंने LED bulb लगाया है, उनका जो बिजली का बिल कम होगा, वो साल भर में हर व्यक्ति के पैसे जो बचेंगे, उसका total होगा सवा सौ करोड़ रुपया। आप कल्पना कर सकते हैं, सामान्य मानवी की जेब में पैसे बचें, किसी के 500 बचेंगे, किसी के 1000 बचेंगे, किसी को 250 बचेंगे, और पूरे शहर के सवा सौ करोड़ रुपया बचना, ये अपने-आप में गरीब और मध्यम वर्ग के बोझ को कम करने का हमारा उत्तम प्रयास है।

इतना ही नहीं, काशी में जो street light लगी है, वो भी अब LED bulb लगा है। और काशी में street light लगने के कारण, LED bulb के कारण, अकेले काशी में करीब-करीब 13 करोड़ रुपयों का बिजली का बिल कम हुआ है। काशी नगर-निगम के 13 करोड़ रुपया बचे हैं। इन 13 करोड़ रुपयों का उपयोग अब काशी के विकास के लिए और कामों में होगा। सरल उपाय, सिर्फ पुराने लट्टू को बदल के LED का लट्टू लगा दिया, और सवा सौ करोड़ रुपया नागरिकों के, 13 करोड़ रुपया नगर-निगम के, ये बच जाना, अपने-आप में हम किस प्रकार से स्विचिता ला रहे हैं।

भाइयो, बहनों, काला धन हो, भ्रष्टाचार हो, बेईमानी हो; उसके खिलाफ मैंने एक बहुत बड़ी लड़ाई छेड़ी है। इस देश के सामान्य ईमानदार आदमी को इसलिए मुसीबत झेलनी पड़ती है क्योंकि बेईमान, ईमानदार की ईमानदारी को लूट रहे हैं। और इसलिए भाइयो, बहनों, ईमानदारी का ये अभियान आज एक उत्सव के रूप में पनप रहा है। जिस प्रकार से जीएसटी में छोटे-छोटे व्यापारी भी जुड़ रहे हैं, जिस प्रकार से आधार के साथ लोग जुड़ रहे हैं, और जो पैसे कहीं निगल जाते थे, वो सारे पैसे, जनता के पाई-पाई का खर्चा, जनता की भलाई के लिए होगा; ये काम हमने करना प्रारंभ किया है। बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। और इसलिए मेरे भाइयो, बहनों, यहां के गांव, गरीब और किसान का विकास, हमारे शहरों का

विकास; विकास, एक मात्र मंत्र ले करके हम चल रहे हैं, और इतनी बड़ी तादाद में आ करके आप ने आशीर्वाद दिया, मैं हृदय से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

हमारे महेन्द्र पांडे जी का ये संसदीय क्षेत्र है और जो ऊर्जा, जो उत्साह और उमंग आपने दिखाया है, इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं फिर एक बार योगी सरकार के महत्वपूर्ण कदमों की बधाई देता हूँ, और जिस सफलतापूर्वक छह महीने के भीतर-भीतर उन्होंने उत्तर प्रदेश में बदलाव लाने का बीड़ा उठाया है, सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं; उनको मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

मेरे साथ जोर से बोलिए- भारत माता की - जय

पूरी ताकत से बोलिए - भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

भारत माता की - जय

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो/निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

11-अक्टूबर-2017 18:08 IST

11 अक्टूबर, 2017 को नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में नानाजी देशमुख की जन्मसदी समारोह के अवसर पर दिये गए प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आज लोकनायक जयप्रकाश जी की जन्म जयंती का अवसर है और आज ही के दिन लोकनायक जयप्रकाश के निकटस्थ साथी श्रीमान नानाजी देशमुख की जन्म जयंती शताब्दी का भी अवसर है। इन दोनों महापुरुषों ने अपने जीवनकाल में एक ऐसे संकल्प का परिचय कराया और जिस संकल्प के लिए उन्होंने स्वयं को झोंक दिया और सिद्धि प्राप्त करने तक वे जीवन का पल-पल मातृभूमि के लिए देशवासियों के कल्याण के लिए अपने संकल्प को साकार करने के लिए वे जीवन भर जुटे रहे। लोकनायक जयप्रकाश जी आजादी के आंदोलन में युवाओं की प्रेरणा रहे थे। 1942 में हिंद छोड़ो यह आंदोलन अपनी तीव्रता पर पहुंचा। महात्मा गांधी, सरदार पटेल समेत सभी राष्ट्र पुरुष अंग्रेज सल्तनत ने जेलों में बंद कर दिया और ऐसे समय जयप्रकाश जी लोहिया जी, ऐसे युवकों ने आगे आ करके उस आंदोलन की बागडोर संभाली थी और उस कालखंड की युवा पीढ़ी के मन में वो प्रेरणा का स्रोत बन गए। आजादी के उस कालखंड में जयप्रकाश जी लोकनायक के रूप में युवा हृदयों के लिए एक प्रेरणा का केंद्र बन गए, लेकिन देश आजाद होने के बाद बहुत बड़े-बड़े लोग सत्ता की गलियारों में अपनी जगह ढूंढते नजर आते थे। यह जयप्रकाश नारायण थे, जिन्होंने सत्ता की राजनीति से अपने को दूर रखा और आजादी के बाद जयप्रकाश जी और उनकी पत्नी श्रीमति प्रभादेवी जी ने ग्रामोत्थान के मार्ग को चुना, लोक कल्याण के मार्ग को चुना।

नाना जी देशमुख, देश उनको ज्यादा जानता नहीं था। देश के लिए उन्होंने अपना जीवन दे दिया था, लेकिन जब जयप्रकाश जी भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग लड़ रहे थे, आपातकाल के पूर्व फिर एक बार जयप्रकाश जी देश में पनप रहे भ्रष्टाचार, उच्च पदों पर पले-बढ़े भ्रष्टाचार उसके खिलाफ दुखी हो करके विद्यार्थी आंदोलन के साथ जुड़ गए थे। गुजरात के नौजवान आंदोलन से प्रेरणा ले करके जयप्रकाश जी एक बार फिर मैदान में आ गए और जयप्रकाश जी के आने के बाद दिल्ली की सल्तनत में खलबली मच गई। जयप्रकाश जी को रोकने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है उसके लिए षडयंत्र होते थे। और पटना में एक बार ऐसी स्थिति आई कि जयप्रकाश जी के ऊपर एक सार्वजनिक कार्यक्रम में जब मार्च निकल रही थी, जयप्रकाश जी पर बहुत बड़ा हमला हुआ। और उस समय उनके बगल में नानाजी देशमुख खड़े थे। नानाजी ने अपने हाथों पर वो मृत्यु के रूप में आए हुए प्रहार को झेल लिया। उनके हाथ की हड्डिया टूट गई, लेकिन जयप्रकाश जी को चोट से उन्होंने बचा लिया और वो एक ऐसी घटना थी कि देश का ध्यान नानाजी देशमुख की तरफ गया। नानाजी देशमुख जीवनभर देश के लिए जिये। उन्होंने ऐसे couple तैयार किए दीनदयाल रिसर्च इंस्टिट्यूट के माध्यम से देश के लिए जीना सीखो, देश के लिए कुछ करके रहो, इस मंत्र के साथ युवा दंपतियों को उन्होंने निमंत्रित किया। सैकड़ों की तादाद में ऐसे युवा दंपति आए आगे और उनको उन्होंने ग्राम विकास के काम में लगाया। जब मुरार जी भाई प्रधानमंत्री थे। देश में जनता पार्टी का शासन था, नानाजी देशमुख को मंत्रिपरिषद के लिए आमंत्रित किया गया। जय प्रकाश के कदमों पर ही नानाजी ने भी मंत्रिपरिषद में जुड़ने से विनम्रता पूर्वक इनकार किया और स्वयं को राजनीति जीवन से निवृत्त करके 60 साल की उम्र के बाद वे जब तक जीवित रहे, करीब साढ़े तीन दशक तक उन्होंने अपना जीवन चित्रकूट को केंद्र बिंदु बना करके, गोंडा को केंद्र बिंदु बना करके ग्रामीण विकास के लिए खपा दिया।

आज मुझे खुशी है कि नानाजी के जन्मशती के अवसर पर भारत सरकार इन महापुरुषों के सपनों के आधार पर और महात्मा गांधी ने जो रास्ता दिखाया उस रास्ते पर ग्रामीण विकास की दिशा में हम कैसे आगे बढ़ें हमारे गांव आत्मनिर्भर कैसे बने, हमारे गांव गरीबी से मुक्त कैसे बने, हमारे गांव बीमारी से मुक्त कैसे बने, हमारे गांव जिसमें आज भी जातिवाद का जहर गांव को बिखेर देता है, गांव के सपनों को चूर-चूर कर देता है, उस जातिवादी भावनाओं से ऊपर उठ करके गांव एक समृद्ध गांव बने, सबको जोड़ने वाला गांव बने और सब मिल करके गांव के कल्याण के लिए संकल्प करे। उस प्रकार के गांव के विकास को जन भागीदारी से आगे बढ़ाने की दिशा में भारत सरकार अनेक कदम उठा रही है।

आज मुझे यहां पर देश के ग्रामीण जीवन के लिए सोचने वाले, ग्रामीण जीवन के लिए योगदान देने वाले, ग्रामीण अर्थकारण का, ग्रामीण कृषि जीवन का ऐसे भिन्न-भिन्न विषयों पर जिनकी महारथ है, ऐसे देश के तीन सौ से ज्यादा लोग कल पूरा दिन बैठे, अलग-अलग गुटों में बैठे, आधुनिक संदर्भ में गांव का विकास कैसे हो, उसका विचार-विमर्श किया और पूरा दिनभर इन अनुभवी लोगों ने जो मंथन किया है। उससे जो अमृत निकला है, आज अभी एक वीडियो के माध्यम से

उसे प्रस्तुत करने का भी प्रयास हुआ। लेकिन मैं इन सब महानुभावों को विश्वास दिलाता हूँ कि आपने जो विचार-विमर्श किया है, मंथन किया है और जो बिंदु छांट करके आपने निकाले हैं भारत सरकार उसको गौर करेगी गंभीरता से लेगी। और उसमें से जितने करणीय मुद्दे हैं, reference points हैं उसको भारत सरकार की योजनाओं में समाहित करते हुए कई वर्षों के बाद इतने बड़े फोरम में भारत के ग्रामीण जीवन के विषय में चिंतन और चर्चा हुई है। देश के हर कोने से लोग आए हैं। अलग-अलग इलाके की प्रकृति अलग है, वहां की समस्याएं अलग हैं, वहां के संसाधन अलग हैं, वहां की आवश्यकताएं अलग हैं। रुचि, प्रवृत्ति, प्रकृति के अनुसार गांव का विकास जड़ों से जुड़ा हुआ होगा तो वो sustainable growth के लिए गारंटी होगा। बाहर से थोपी हुई चीजें ग्रामीण जीवन के अंदर ज्यादा समय तक foreign element के रूप में संघर्ष में बीत जाती है और कभी-कभी ग्रामीण जीवन बाहर से थोपी हुई चीजों को स्वीकार करने के लिए साहस नहीं जुटा पाता है। और इसलिए हमारा प्रयास यह है कि गांव की अपनी जो शक्ति है, गांव का अपना जो सामर्थ्य है सबसे पहले उसी को जोड़ते हुए विकास का मॉडल बनाएंगे जो गांव के लोगों के अनुकूल होता है, परिचित होता है। उसमें थोड़े modification की जरूरत होती है। इसके लिए वैज्ञानिक तरीके से आर्थिक दृष्टि से टेक्नोलॉजी के दृष्टि से एक support system की requirement होती है। और उसको हम बल दे करके चलते हैं, तो गांव आसानी से उससे जुड़ जाता है। गांव उस विकास यात्रा को अपने कंधे पर उठा लेता है और sustainable विकास की वो एक गारंटी बन जाता है। आपने जो चिंतन-मनन किया है वो धरती के अनुभव के आधार पर किया है और अनुभव के आधार पर की हुई चीजें.. मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में ग्रामीण विकास को जिस तेजी से हम लेना चाहते हैं। एक बात हमें समझनी होगी हम विकास करना चाहे, इतने से बात पूरी नहीं होती, हम अच्छा करना चाहे इतने से बात नहीं पूरी होती है, अगर हम चीजों को समय-सीमा में करें। हम हमारी योजनाओं को जो लाभार्थी है, targeted group हैं उसके लिए शत प्रतिशत लागू करें। योजना जिस मिजाज से शुरू की गई, जिस भूमि पर शुरू की गई, उसमें delusion न आए diversion न आए और उसको लागू करने का समय-सीमा में प्रयास करें और वो भी output आधारित नहीं, outcome आधारित हो। सिर्फ हमने इतना बजट खर्च दिया, वो नहीं। इस बजट का यह हमारा लक्ष्य था, यह हमने परिपूर्ण किया अगर इस प्रकार से हम एक comprehensive प्रयास करेंगे और समय-सीमा में करेंगे तो मुझे विश्वास है कि 70 साल में ग्रामीण विकास की जो गति रही है। 2022 आजादी के 75 साल मनाएंगे, तब हमारी विकास की गति इतनी तेज होगी कि जो 70 साल से सपने संजो करके बैठा हुआ मेरा ग्रामीण व्यक्ति है, उसकी जिंदगी को भी बदलाव ला सकता है। आज गांव का नागरिक भी शहर की बराबरी की जिंदगी जीना चाहता है, जो सुविधा शहर को उपलब्ध है, वो सुविधा गांव को भी उपलब्ध होनी चाहिए। अगर शहर में बिजली जगमगाती है, तो गांव में भी बिजली जगमगानी चाहिए, अगर शहर के लोग मन चाहे तब टीवी देख सकते हैं तो गांव के लोग भी देख सकें, अगर शहर का बच्चा स्कूल की लेबोरेटरी में जा करके प्रयोग कर सकता है तो गांव का बच्चा भी स्कूल की लेबोरेटरी में प्रयोग करने के लिए उसको अवसर होना चाहिए। अगर शहर का बच्चा आधुनिक कम्प्यूटर के द्वारा टेक्नोलॉजी की शिक्षा प्राप्त कर रहा है, तो यह भी आवश्यक है कि गांव के बच्चे को भी उसी टेक्नोलॉजी के द्वारा प्रशिक्षित होने का अवसर होना चाहिए। उसको भी टेक्नोलॉजी में आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

अगर इंटरनेट... आज कभी-कभी गांव में टीचर रहने को तैयार नहीं, डॉक्टर रात में चला जाना चाहता है, लेकिन जो सुविधाएं शहर में हैं, वैसी अगर हम सुविधाएं... अगर नल से पानी आता है, optical fibre network है, इंटरनेट से जुड़ा हुआ है, चौबीसों घंटे बिजली है, चूल्हा जलाने के लिए गैस उपलब्ध है। अगर इन प्राथमिक सुविधाओं को भी अगर हम पहुंचाने में सफल होते हैं, तो एक quality of life में बदलाव आएगा वो गांव में भी लोगों को रहने में प्रेरित करेगा। अगर टीचर गांव में रहता है, डॉक्टर गांव में रहता है, सरकारी बाबू गांव में रहता है, तो गांव के जीवन में उसकी हाजिरी भी बदलाव का एक बहुत बड़ा कारण बनती है, और इसलिए महात्मा गांधी जी ने जो सपना देखा था, दीनदयाल उपाध्याय जी ने जो चिंतन किया था। नानाजी और जयप्रकाश जी लोगों ने जिन विचारों को ले करके जिया था इन्हीं आदर्श धारा को लेते हुए हम लोगों का भी यह प्रयास है कि हम ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने के लिए महत्वपूर्ण दिशा में आगे बढ़ें।

हमारे देश में संसाधनों के कारण आखिरी छोर के इंसान को हम कुछ नहीं दे पाते हैं। आज भारत सरकार में आने के बाद मैं इस बात से अब सहमत नहीं। हिंदुस्तान के आखिरी छोर के व्यक्ति को भी अगर उसके हक का है जो उसको पहुंचाना

है तो देश के पास संसाधनों की कमी नहीं है। जो कमी महसूस होती है वो Good Governance की है, सुशासन की है। जिन-जिन राज्यों में Good Governance हैं, सरकारी मशनरी निर्धारित समय में टारगेटेड काम को पूरा करने की आदी हैं तो वहां पर बदलाव नजर आता है। आप देखिए मनरेगा, अब मनरेगा की एक विशेषता है, वो बना है गांव के लिए गरीब लोगों को रोजगार देने के लिए है। लेकिन अनुभव यह आता है कि जिस राज्यों में ज्यादा से ज्यादा गरीबी है, वहां पर मनरेगा का काम कम हो रहा है। लेकिन जिन राज्यों में कम गरीबी है, लेकिन Good Governance है वहां राज्य proactive है। ज्यादा से ज्यादा योजना बना देते हैं, ज्यादा लोगों के जोड़ देते हैं और ज्यादा काम कर लेते हैं। और इसलिए ग्रामीण विकास के लिए Good Governance पर बल यह हमारी सरकारी का निरंतर प्रयास है। आज जो DISHA नाम का जो डिजिटल डैशबोर्ड आपके सामने प्रस्तुत किया गया वो एक प्रकार से Good Governance की दिशा का एक अहम कदम है। जिसके कारण सेंट्रली हर चीज को मॉनिटर किया जा सके, समय-सीमा में review किया जाए, अगर उसमें कमियां हैं तो उसको correct करने के लिए measure लिए जाए, और policy problem है तो policy correct किया जाए, अगर person problem है तो person को correct किया जाए, लेकिन DISHA इस प्रकार के डैशबोर्ड के कारण एक तो इसके मॉनीटरी की पूरी व्यवस्था हिंदुस्तान के सभी गांव के साथ जुड़ेगी। दूसरा भारत सरकार का जो विजन है, राज्य सरकार की जो योजनाएं हैं और हमारा जो Parliament का member व District इकाई है, यह सभी अगर विकास को एकसूत्र में करेंगे। priority होगी तो हमें इच्छित परिणाम जरूर मिलेगा। और इसलिए इस दिशा के माध्यम से जन-प्रतिनिधियों को सक्रिय रूप से जोड़ने का एक अहम काम भारत सरकार ने किया है, इस दिशा के द्वारा। Parliament का member जिला इकाई के साथ बैठ करके इन सारी योजनाओं का review करता है। priority वहां की आवश्यकता के अनुसार तय करता है। चीजें यहां से थोपी नहीं जाती हैं। और इस कारण कार्य में गति लाने की दिशा में एक बहुत बड़ी सफलता मिली है। लोकतंत्र की सफलता सिर्फ कितने लोग मत पेटी में मत डालने जाते हैं, वोट डालने जाते हैं। दुर्भाग्य से कई वर्षों तक हमने लोकतंत्र को यहां सीमित कर दिया कि पांच साल में एक बार जाना, डिब्बे में पर्चा डाल देना या बटन दबा देना। और फिर सरकार जो भी चुन करके आए जो भी बॉडी चुन करके आए, पंचायत चुन करके जो आए वो हमारा पांच साल में भाग्य तय करेगी। मैं समझता हूँ कि लोकतंत्र को इतना सीमित नहीं सोचा जा सकता। लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण काम जरूर है कि अपनी पसंद की सरकार चुने, लेकिन लोकतंत्र की सफलता तब होती है जब जनभागीदारी से देश चले। जनभागीदारी से गांव की विकास यात्रा चले, जन- भागीदारी से नगर की विकास यात्रा चले और इसलिए जनता के साथ सरकार का संवाद अनविर्य होता है। जीवन का संवाद होना चाहिए। ऊपर से नीचे की तरफ correct guideline जानी चाहिए और नीचे से ऊपर की तरफ correct information जानी चाहिए। अगर यह two way channel perfect होती है तो योजनाएं, नीतियां और बजट allocation सही टारगेटेड जगह पर सारी चीजें हो सकती हैं और इसलिए आज एक मोबाइल एप के द्वारा ग्रामीण संवाद के द्वारा गांव का व्यक्ति अपने मोबाइल फोन के माध्यम से सही जानकारी ऊपर तक पहुंचा सकता है और ऊपर से सही मार्ग दर्शन last man Standing तक सीधा पहुंच सकता है और उसके कारण वहां स्थानीय इकाई जो सरकारी रहती है उन पर भी दबाव व्यक्त होता है, क्योंकि गांव का व्यक्ति कहता है कि बाबू आप कहते हो यह योजना, लेकिन मेरा मोबाइल फोन तो कहता है कि यह योजना है, आप बताइये कि हमारे यहां क्यों लागू नहीं हुई। यह जनता का जागरूक करने का एक बहुत बड़ा काम इस मोबाइल एप के द्वारा टेक्नोलॉजी का उपयोग करते, जनता के साथ संवाद बढ़ाते हुए, उसकी आवश्यकताओं को समझते हुए काम को दिशा देना, गति देना उसकी दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं।

आज का भी देशभर में कई जगह उद्घाटन हुआ है। उसी प्रकार से agriculture विभाग का यही पर एक Phonemics Centre का भी एक बड़ा महत्वपूर्ण प्लॉट का आज उद्घाटन हुआ है। हमारे देश में कृषि क्षेत्र और पशुपालन यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केंद्र बिंदु हैं। लेकिन साथ-साथ हमारे ग्रामीण जीवन में जो Artisans हैं उनका भी ग्रामीण अर्थकारण में बहुत बड़ा योगदान है। और इसलिए चाहे पशुपालन हो, चाहे खेती हो, चाहे हथकरघे का काम हो, हस्तकला से जुड़े हमारे लोग हो, उनको जोड़ करके हमने हमारी अर्थव्यवस्था के pillars को मजबूत करने की दिशा में हम काम कर रहे हैं। 2022 भारत की आजादी के 75 साल देश के किसानों की आय डबल करने की दिशा में एक संकल्प ले करके हम काम कर रहे हैं। एक तरफ किसान की जो input cost है उसकी जो लागत है उसको कम करना है। और दूसरी तरफ उसका उत्पादन

जो है, उसको बढ़ाना है। अगर यह दोनों चीजों पर हम चलेंगे तो हमें टेक्नोलॉजी की मदद लेनी होगी। हमें आधुनिकता की तरफ जाना होगा। पशुपालन, पशु की संख्या भले कम हो, लेकिन दूध का उत्पादन ज्यादा हो, प्रति पशु दूध का उत्पादन बढ़े उस दिशा में जितना तेजी से आगे बढ़ेंगे वो ग्रामीण अर्थ जीवन आगे बढ़ेगा। हम आज दुनिया में chemical wax के बदले में शहद वाला wax जो है मोम है उसकी दुनिया में बहुत मांग बढ़ रही है। लोग chemical wax से मुक्ति पा करके honeybee का जो wax होता है, उसकी ओर जा रहे हैं। अगर हम गांवों में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दें, scientific तरीके से honeybee का पालन करना हमारे किसान के पशुपालन के साथ जुड़ जाए, अतिरिक्त income की संभावनाएं बढ़ेगी और आज जो बहुत बड़ा market bee wax का है honeybee wax का है, chemical wax से लोग मुक्ति चाहते हैं। भारत इसमें बहुत बड़े मार्केट को दुनिया में capture करने की ताकत रखता है और उस दिशा में हम आगे जाना चाहते हैं। हमारे यहां मत्स्य उद्योग हो, हमारे यहां पॉलिट्री फार्म्स हो, हमारे पशुपालन हो, हमारे यहां agriculture हो, उसमें भी टिंबर की खेती पशुपालन के साथ-साथ खेती के साथ-साथ अगर खेत के किनारे पर टिंबर की खेती करे, तो देश आज टिंबर import करता है। उससे बच जाएगा और देश का किसान टिंबर से इतनी कमाई कर पाएगा कि उसको कभी परिवार में संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा। पांच-दस साल मेहनत करने की जरूरत है अपने आप परिणाम आना शुरू हो जाते हैं तो ऐसी एक comprehensive integrated approach के साथ ग्रामीण विकास को आगे बढ़ाने की दिशा में हम काम कर रहे हैं। हम कुछ काम निर्धारित समय-सीमा में करने के इरादे से करते हैं। मुझे खुशी है कि पहले ग्रामीण जीवन के साथ एक गंदगी ग्रामीण जीवन का हिस्सा बन गई थी। लोग सहते रहे, उन्होंने यही मान लिया कि हमारे नसीब में यही लिखा हुआ है। और धीरे-धीरे जैसे जागृति आ गई लोगों में यह बदलाव की शुरुआत हुई। Open Defecation Free गांव की माताओं-बहनों के सम्मान का एक अभियान चला है। toilet बनाने का एक अभियान चला समय-सीमा में Toilet बनाने का, शौचालय बनाने का काम चला। और आज धीरे-धीरे स्थिति आई है, कल तक जिसे हम शौचालय कहते थे, आज हिंदुस्तान में उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने उसका नाम इज्जतघर कर दिया है। शौचालय पर लिखा है इज्जतघर। सचमुच में माताओं-बहनों की इज्जत के लिए इससे बड़ा कोई तोहफा नहीं हो सकता जो कि हम Toilet बनाने करके देते हैं। हमारी माताओं-बहनों को शौच के लिए खुले में जाना पड़े, सूरज ढलने तक इंतजार करना पड़े और सुबह सूरज उगने से पहले जा करके आना पड़े और दिन में कभी जाने की नौबत आई, उस मां-बहन को कितनी पीड़ा होती होगी यह जब तब उस संवेदना को अनुभव नहीं करेंगे, तब तक Open Defecation Free का आंदोलन सफल नहीं हो सकता है। और इसलिए जब भी शौचालय बनाने की बात आए। उन मां-बहनों की इज्जत की तरफ देखिए, उन मां बहनों की परेशानियों की तरफ देखिए आपको भी लगेगा बाकी काम छोड़ करके पहले भारत सरकार की योजना से मैं शौचालय बनाऊं और शौचालय का उपयोग करने की आदत डालूं।

ढाई लाख से अधिक गांव Open Defecation Free होने के लिए आगे आए। उन्होंने करके दिखाया। मैं उन गांवों को हृदय से बधाई देता हूं, उन्होंने मां-बहनों की इज्जत के लिए एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। और मां-बहनों की इज्जत करने वाला गांव मेरे लिए पुण्य गांव होता है। मैं उसको नमन करता हूं, उन गांव वासियों को नमन करता हूं कि जिन्होंने इस महत्वपूर्ण काम को किया है।

स्वच्छता आज गांव का स्वभाव बन रहा है। गांव भी जिम्मेदारी को लेने लगा है। हमारे कई गांव आजादी के 70 साल बाद भी, 18 हजार गांव ऐसे, जो आज भी 18वीं शताब्दी में जीते हैं। न बिजली का खम्भा है, न बिजली का लट्टू है, न गांव में कभी बिजली देखी है। हमने बीड़ा उठाया, लालकिले से कहा एक हजार दिन में 18 हजार गांव में बिजली पहुंचाएंगे और मुझे खुशी है कि राज्य सरकारों ने भी उसमें हाथ बंटाया, भारत सरकार ने भी उसमें तेजी लाई और आज बहुत तेजी से 18 हजार गांव के उस लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं, करीब-करीब 15 हजार गांव में बिजली पहुंच गई है। अब गांवों में बिजली पहुंच गई तो हम वहां अटकने वाले नहीं हैं। अब हमारा सपना है गांव हो या शहर घर हो या झोपड़ी हरेक के घर में बिजली का लट्टू होना चाहिए। 24 घंटे बिजली मिलनी चाहिए, बड़ा बीड़ा उठाया है। और इसलिए गरीब परिवारों को घर में कनेक्शन देने के लिए पहले पैसे देने पड़ते थे। हमने तय किया है मुफ्त में कनेक्शन देंगे, बिजली पहुंचाएंगे और मुझे विश्वास है कि एक बार बिजली आई तो घर के जीवन में भी बदलाव आएगा, बच्चों को शिक्षा के लिए

सुविधा बढ़ेगी। घर का जीवन बदलेगा, 24 घंटे बिजली देने का निर्धारित लक्ष्य के साथ काम करने की दिशा में आज हम आगे बढ़ रहे हैं। हिंदुस्तान के ग्रामीण जीवन को बदलने के लिए हमारे जो ग्रामीण लोग उत्पादन करते हैं, उसको शहर में एक फैशन statement के रूप में उसे पल्वित-पुष्पित करने की जरूरत है। सामान्य व्यक्ति ने अपने हाथ से बनाई हुई चीजें अगर बड़े-बड़े घरों में उसका थोड़ा सा भी उपयोग हो जाए, ग्रामीण economy को बड़ी ताकत मिल जाएगी। दिवाली के दिये गांव में मेरे कुम्हार के बनाये हुए अगर खरीदेंगे तो उस मेरे कुम्हार के घर में दिवाली का दिया अपने आप जलने लग जाएगा। और यह हमारे लिए मुश्किल काम नहीं है। हम शहर में रहने वाले लोग हमारी पूरी जीवन की आवश्यकताओं को ग्रामीण अर्थकारण की दृष्टिकोण से आगे बढ़ाएंगे तो नयापन भी महसूस होगा। एक जीवन में संतोष का भाव भी आएगा और इसलिए शहर गांव के लिए एक Market Place बनना चाहिए। सिर्फ गांव से आने वाला अनाज शहर के लिए Market Place बने ऐसा नहीं, लेकिन शहर में उत्पादित हों। गांव में उत्पादित होने वाली हर चीज शहर के लिए Market Place के रूप में develop होती है, तो कभी भी मेरे देश में गांव गरीब नहीं रह सकता है, गांव में कोई परिवार गरीब रह सकता है और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने जो अंत्योदय का सपना देखा था उस सपने को हम पूरा कर सकते हैं। आज नानाजी देशमुख की जन्म शताब्दी में भारत सरकार की तरफ से एक पोस्टल स्टैम्प का भी लोकार्पण हुआ है। मुझे विश्वास है जब भी ये डाक पोस्टल स्टैम्प के साथ लोगों के यहां पहुंचेगी नाना जी के प्रति स्वभावित उत्सुकता जगेगी। कैसे-कैसे महापुरुष सिर्फ देश के लिए जीना यही जिनका मकसद रहा। गांव के जीवन में बदलाव लाना, किसी के लिए खुद जा करके प्रयोग करना और देश के सभी राष्ट्रपति नाना जी ने जब से गांव का शुरू किया उसके बाद जो भी राष्ट्रपति आए वो हमेशा नाना जी इस काम से जुड़े रहे। नाना जी के काम को सराहते रहे। नानाजी के प्रोजेक्ट देखने के लिए खुद जाया करते थे और ये काम नाना जी की कौशल्य की विशेषता थी। आज नाना जी की जन्मशती के दिन हिंदुस्तान भर के ग्रामीण जीवन के लोग आए हैं। भारत सरकार के सभी संबंधित सरकार जुड़े हैं और ग्रामीण जीवन में बदलाव लाने का एक संकल्प ले करके हम चले हैं। मुझे विश्वास है कि 2022 आजादी के 75 साल हर गांव वो भी एक संकल्प करें हर गांववासी वो भी एक संकल्प करें कि 2022 तक मैं मेरे गांव को ये दूंगा और मेरा गांव हम मिल करके हम देश को ये देंगे। अगर ये संकल्प ले करके चलेंगे मुझे विश्वास है हम ग्रामोदय के जिस सपनों को ले करके चले हैं उसको पूरा करने में सफल होंगे। मैं फिर एक बार आपसे आग्रह करूंगा यहां जो प्रदर्शनी लगी है, मैं अभी देखने गया था। जो आए हैं उनको भी कहने के लिए बहुत सारी बातें हैं, सफलता के साथ किए हुए अनुभवों का वहां निचोड़ है। मेरा भी मन करता था, बार-बार ठहर जाता था। देखने की, समझने की कोशिश करता था। मन को आनंद होता था कि गांव-गांव कैसे-कैसे प्रयोग हो रहे हर राज्यों में, कैसे-कैसे नये-नये प्रकार के initiative लिए गए हैं। गांवों में भी टेक्नोलॉजी ने कैसे अपनी जगह बनाई है। यह सारी चीजें देख करके मन को बड़ी प्रसन्नता हुई है। मेरा आपसे आग्रह है। आप कितने ही व्यस्त क्यों न हो, कितनी ही जल्दी ही जाने की क्यों न हो, इस प्रदर्शन की हर चीज को बारीकी से देखिए। आपके गांव में उसमें से क्या लागू हो सकता है। उसका जरा कागज पर लिख करके रखिए। किसका संपर्क करना वो भी नोट कर लीजिए और उसमें से कौन सी चीजें आपके गांव के लिए अनुकूल है। उसको आप अपने गांव में जा करके कैसे लागू कर सकते हैं। आखिरकार जब कोई चीज को देखते हैं तो उसकी ताकत का परिचय ज्यादा होता है। और इसलिए मैं आग्रह करूंगा कि आप सभी से दो-चार घंटे भी इस प्रदर्शनी में जरूर लगाइये, हर चीज को देखिए और अच्छी चीजों को अपने गांव में ले करके जाइये। मैं फिर एक बार नानाजी को प्रमाण करता हूं, बाबू जयप्रकाश जी को नमन करता हूं और सभी गांव से आए हुए मेरे जागरूक नागरिक भाईयों-बहनों को प्रमाण करता हूं और आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

अतुल कुमार तिवारी/हिमांशु सिंह /तारा

